Miśra, Śivaśankara
Gazaba kī holī

PK
2057
M57
1922

Gazaba ki holi

गज़ब की होली

या

राष्ट्रीय फाग।

Miśra, Śivaśaṅkara

लेखकः—

पं० शिवशंकर मिश्र, बेथर—उन्नाव।

पं० सिद्धगोपाल शुक्ल, बिगहपुर—उन्नाव।

प्रकाशक—

भारती भण्डार, दालमंडी, कानपुर।

प्रथम संस्करण २००० तारीख २८—१—२२

द्वितीय बार ५००० } तारीख ७ फरवरी सन् १९२२ ई० { मूल्य -)॥

Printed by. C. M. Dayal, at the Anglo-Arabic Press, Mall Road, Lucknow.

सूचना।

स्थानीय जनता और हमकारों को यह पुस्तक निम्नलिखित स्थानों पर मिलेगी। व्यापारियों को सिर्फ प्रकाशक से मँगाना चाहिये। काफ़ी कमीशन मिलता है।

१—गौड़बन्धु पुस्तकालय, चौक कानपुर।
२—चुन्नीलाल गौड़, बुकसेलर चौक कानपुर।
३—अब्दुलशमद, बुकसेलर चौक कानपुर।
४—अब्दुलगनी, बुकसेलर चौक कानपुर।
५—शीतलप्रसाद वाजपेयी नारियल बाज़ार कानपुर।
६—बाबूलाल, बुकसेलर प्रयागनारायण का मंदिर कानपुर।
७—चंद्रिकाप्रसाद शुक्ल, बुकसेलर नई सड़क कानपुर।
८—हिन्दी पुस्तक भण्डार, २५ श्रीराम रोड लखनऊ।
तथा अन्य पुस्तक विक्रेताओं से भी माँगिये।

भवदीय—

मैनेजर, भारती भण्डार,

दालमंडी कानपुर।

PK
2057
M57

गज़ब की होली।

फाग नं० १

जय जय भारत भूमि हमारी ॥

कोटि बार है तुम्हें वन्दना, जन्मभूमि सुखकारी।
शस्य श्यामला रत्न कि गर्भा, बार बार बलिहारी ॥ १ ॥
बीर प्रसू तू धीर जननि है, तीनि लोक से न्यारी।
सब से पहिले कौशल तेरा, रहा विश्व में जारी ॥ २ ॥
दे बरदान हमें हे जननी ! छूटै चिंता सारी।
हो अशंक सुख भोग करें हम, तेरे अंक मँझारी ॥ ३ ॥
दयादृष्टि हो जावे तेरी, लगी आश है भारी।
है स्वतंत्र हम जग में विचरैं, रहें न दीन दुखारी ॥ ४ ॥
गावें तो गुण तेरे गावें, रूप रंग विस्तारी।
प्रेम पन्थ के पथिक बनें तो, होवे चाह तिहारी ॥ ५ ॥
उजड़ गई है आर्य्यभूमि यह, सुर मुनि की फुलवारी।
हरी भरी फिर एक बार हो, हम होवें अधिकारी ॥ ६ ॥
अंतिम विनय यही है जननी ! देहु न हमें बिसारी।
तीस कोटि हम तन मन धन से, सेवा करें तुम्हारी ॥ ७ ॥

फाग नं० २

यह बड़े गज़ब की होली है ॥

उधर फौज की खड़ी कतारें, इधर जरा सी टोली है।
उधर घात है बात बात में, इधर प्रेम की बोली है।
उधर चैन की बंशी बाजे, इधर गले में झोली है।
बड़ी चंट है नौकरशाही, प्रजा बिचारी भोली है—
यह बड़े गज़ब की होली है ॥

अटपट खेल लख्यो जब मोहन, नई राह तब खोली है।
टोपी धोती और अँगौछा, खद्दर ही की झोली है।
मरि हम जइबे चुप्प न ह्वइबे, यही सबन की बोली है।
जहँ देखो तहँ कुंज गलिन में, घूम रही वह टोली है—
यह बड़े गज़ब की होली है ॥

जब सुधार में सार न पायो, जान्यो होत ठिठोली है।
ग्वाल बाल तब बनिगे जोगी, डारि लियो उर झोली है।
अलख अलख की टेर लगाई, लोगन थैली खोली है।
तिलक फंड की झोली भरिगै, क्या जादू की बोली है—
यह बड़े गज़ब की होली है ॥

अजब धूम है ठाट निराला, मुदित हमारी टोली है।
फौज बिचारी ठाढ़े सोचै, ढोल हमारी पोली है।
सत्याग्रह का किला कठिन है, असर न करती गोली है।
धन्य धन्य है मोहन तुमको, नौकरशाही डोली है—
यह बड़े गज़ब की होली है ॥

फाग नं० ३

सब मिलि चलो जेल को जइये ॥

अमदाबाद में भई काँगरस, तहँ की बात बतइये।
बड़े बड़े नेता मिलि बोले, सेवक-संघ बनइये ॥ १ ॥
असहयोग के समर क्षेत्र में, आगे पैर बढ़इये ।
सहन शक्ति की ढाल न तजिये, हँसि हँसि शीश कटइये ॥ २ ॥
है सज्जित सत्याग्रह करिये, चरखा चारु चलइये ।
कानूनन की भद्र अवज्ञा, करिये औ करवइये ॥ ३ ॥
हिंसा हीन समर है यारो ! ऐसो क्षेत्र बनइये ।
प्रेम भाव हो दुश्मन पर भी, समय परे अपनइये ॥ ४ ॥
जहाँ गये हैं बीर लाजपत, चलो तहाँ है अइये ।
शौक़त और मुहम्मद से मिलि, जीवन सफल बनइये ॥ ५ ॥
मोतीलाल जवाहिर पइये, पुरुषोत्तम बनि जइये ।
कृष्णाकान्त गोविन्द मुरारी, नारायण गुण गइये ॥ ६ ॥
हैं जिस राह गये सब नेता, वही राह अपनइये ।
दीन हीन है भारत जननी ! ताकी लाज बचइये ॥ ७ ॥

अररररर कबीर—

तड़क भड़क की चीज़ें छोड़ो, चरखा लेहु उठाय ।
सूत कातिं कपड़ा बुनवाओ, गान्धी रहे बताय—
भला घर बैठे देश सुधार करो ॥

फाग नं० ४

है धूम मची सत्याग्रह की ॥

सेवक दल में नाम लिखैये, यही राय अब है सब की।
कानूनों की करें अवज्ञा, इज्जत करते थे जिनकी।
सेवक संघ बतायो बागी, जड़ बोई है विग्रह की।
यह बागी पन रहै मुबारक, हमैं न चाह अनुग्रह की -
है धूम मची सत्याग्रह की ॥

पकड़ धकड़ जब पुलिस मचाती, रहती शंका ऊधम की।
मगर शान्ति का भंग न होता, काम नहीं करती धमकी।
चलै मुक़दमा पहुँचै सदमा, मगर साध लेते चुपकी।
करैं बीर क्यों वृथा पैरवी, जिन्हें चाह बंदीगृह की—
है धूम मची सत्याग्रह की ॥

जेल में जाते कष्ट उठाते, तौक़ गले में है लटकी।
कम्बल मैले वस्त्र कुचैले, सदा सुना करते झिड़की।
रूखे सूखे भोजन पाते, चक्की पीसैं दो पटकी।
मन मलीन पर कभी न होता, देख विपद कारागृह की—
है धूम मची सत्याग्रह की ॥

छूटि जेल से जब वह आते, खाक छानते दर दर की।
लै झंडा बस धूम मचाते, झोली डाले खद्दर की।
जिनके नित उठि है यह धंधा, लगी चाट पक्के घरकी।
तिनको प्रतिदिन कैसे पकड़ें, जिन्हें याद भूली गृहकी—
है धूम मची सत्याग्रह की ॥

फाग नं० ५

सब मिलि भारत के गुण गैये ॥
काँगरेस में नाम लिखैये, चरखा चारु चलैये ।
देशी ताना देशी बाना, देशी भेष बनैये ॥ १ ।
धर्म अहिंसा धारण करिये, सेवक संघ बनैये ।
बंद करैये जुवाँ डकैती, सब को सुख पहुँचैये ॥ २ ॥
गाँजा भंग अफीम तमाखू, और शराब नसये ।
हाँथ जोरि समझैये सब को, ठेके बन्द करैये ॥ ३ ॥
छुवा छूत का झगड़ा तजिये, सब को गले लगैये ।
नीच ऊँच का बुरा बखेड़ा, सज्जन ! नहीं उठैये ॥ ४ ॥
न्याय मिलत है मोल जहाँ पर, तहाँ न कबहूँ जैये ।
करत वकील दलाली जिनकी, तिनसे प्राण बचैये ॥ ५ ॥
राय साहबी बुरी बलैया, तासों पिंड छुड़ैये ।
मजिस्ट्रेट है भला अनारी, क्यों जग बीच कहैये ॥ ६ ॥
गवर्मेंट की छोड़ नौकरी, टेक्स बन्द करवैये ।
सत्याग्रह की ध्वजा देश में, घूमि घूमि फरकैये ॥ ७ ॥
हँसी खुशी दारुण दुख सहिये, गांधी को न भुलैये ।
है स्वतंत्र फिर जग में यारो, जगमग ज्योति जगैये ॥ ८ ॥

अररररर कबीर—

जो हुजूर की कहै मेहरिया, दीन्हों उमिरि बिताय ।
तुम स्वराज्य हित कुछौ न कीन्हों, चकिया पीसौ जाय—
भला हम सूत काति अब लइ लेबे ॥

फाग नं० ६

कहाँ से जुलमी डायर आयो ॥

अमृतसर में प्रजा निहत्थी, चाहत शोक मनायो ।
तहँ डायर ने तोप लगाई, हँसि हँसि खून बहायो ॥ १ ॥
गोलिन की बौछार कराई, वायूयान उड़ायो ।
बाल वृद्ध घिर गये बिचारे, तिन्हें शिकार बनायो ॥ २ ॥
रंग भंग ह्वै गयो सभा को, विकट बम्ब बरसायो ।
घेरि घेरि मन मानी कीन्हीं, दुःख न जात बतायो ॥ ३ ॥
बृटिश न्याय को नाम डुबायो, कठिन कलंक लगायो ।
कियो अनादर दीन प्रजा को, कैसे जाय भुलायो ॥ ४ ॥
भारत जननी बिलख रही है, बड़ अन्धेर मचायो ।
भून दिये मम पुत्र बिचारे, पशु पक्षी करि पायो ॥ ५ ॥
जब जर्मन से भई लड़ाई, तब इन शीश कटायो ।
ब्याज सहित यह दीन्हों बदला, बानी तिन्हें बतायो ॥ ६ ॥
मरे तड़प कर जिनके बच्चे, तिनको जेल पठायो ।
पापी डायर पेंशन पावे, न्याय को नाम लजायो ॥ ७ ॥

अरररररर कबीर—

अमृतसर जलियान बाग में, तोपैं दई लगाय ।
गोलिन की बौछार कराई, प्रजा निहत्थी पाय—
भला यह बड़ा अधर्मी डायर है ॥

फाग नं० ७

कहाओ वीरों की सन्तान ॥

गाढ़ा पहिनो चरखा कातो, जबलों तन में प्रान।
मलमल चिकन पहिरने में, ना समझो अपनी शान ॥ १ ॥
देशी भोजन देशी भाषा, देशी सब सामान।
देश वासियों की इज्जत को, समझो अपना मान ॥ २ ॥
मातृ भूमि के हेतु लगा दो, तन मन धन अरु जान।
असहयोग के पुण्य क्षेत्र में, हो जाओ बलिदान ॥ ३ ॥
सोवत जागत निश दिन होवे, भारत ही का ध्यान।
निजला अबला मातृ भूमि को, कर दो स्वर्ग समान ॥ ४ ॥
फाँसी चढ़ो फँसो नहिं फन्दे, मोह मनोहर मान।
कह दो सत्वर स्वत्व लेन हित, आता हूँ लो जान ॥ ५ ॥
कारागार कठिन में हो यदि, करो न दुख तुम म्लान।
झन झन झन झन बेड़ी करके, गाओ प्रमुदित गान ॥ ६ ॥
जंगल में भी मंगल करदो, छेड़ छेड़ शुभ तान।
गिरि अरु गुहा सभी में गूंजे, लखूँ स्वराज्य सम्मान ॥ ७ ॥
महल कुटी गृह में अब सुख से, गाओ प्रिय मुद गान।
प्रिय स्वराज्य हित प्राण त्याग दो, गूँजे घर घर गान ॥ ८ ॥
रोग ग्रसित हो निर्बल हो तुम, कर नहिं सकते काम।
हाय हाय ना बोलो, बोलो जय स्वराज्य सुख धाम ॥ ९ ॥
जहँ पर भी हो जैसे भी हो, गाओ ऐसा गान।
रोम रोम कण कण से कह दो, है स्वराज्य प्रिय प्राण ॥१०॥

फाग नं० ८

बाजा असहयोग का डंका ॥

जो सुनि पावै सो उठि धावै, करत नहीं कछु शंका है।
कर्म क्षेत्र में कूदि परत है, कहते लोग उलंका है।
पुत्र पिता को कहा न मानै, समय बड़ो यह बंका है।
काम करै सो नाम कमावै, कौन राय को रंका—
बाजा असहयोग का डंका ॥

छोंड़े देत वकील वकालत, मन अति मुदित न शंका है।
परेशान हैं राय बहादुर, नाहक लग्यो कलंका है।
उजड़े जात नशे के ठेके, होत न भीड़ भड़क्का है।
कालिज सूने लगैं भयंकर, मानों फूँकी लंका—
बाजा असहयोग का डंका ॥

बीच बजार रच्यो है होली, सब फगुहार उलंका हैं।
दै परदेशी पटकी आहुति, जोरत भीड़ भड़क्का हैं।
छीने लेत दुपट्टा टोपी, जर्यो फिल्ट को अंका है।
बेंच रहे जो वस्त्र विदेशी, तिनको भई कुशंका—
बाजा असहयोग का डंका ॥

देश विदेश चली यह चरचा, भारत अजब लड़ंका है।
बिन तरवारि रारि है ठानी, नाहक लेत कलंका है।
चाहत पंगु पहाड़ उलंघन, सबको होत कुशंका है।
मोहन बेड़ा पार लगइहैं, करि सत्याग्रह बंका—
बाजा असहयोग का डंका ॥

फाग नं० ९

सदा आनंद रहै यह टोला, मोहन खेलैं होली हो !
जब तक नहीं स्वराज्य मिलेगा, भारत की कस होली हो !
है हिन्दू मुस्लिम ने मिल कर, प्रेम-पिटारी खोली हो !
डाल चुके हैं अपने उर में, अब तो यारों झोली हो !
हैं ले चुके फकीरी बाना, एक रहेगी बोली हो !
चहे कोइ तलवार चलावे, चहे मारदे गोली हो !
जलियाँ वाले बाग बनाले, चाहे करै ठिठोली हो !
लै स्वराज्य जब रंग जमावें, तब खेलैं फिर होली हो !

फाग नं० १०

अब हैं तीरथ जेल हमारे ॥

जहाँ गये आँखों के तारे, भारत प्राण दुलारे ।
माता बहिन देवियाँ जातीं, तुम हो कैसे न्यारे ॥ १ ॥
सत्याग्रही पूर्ण बन जाओ, सहो सितम मन मारे ।
रण से हटो न पीठ दिखाओ, सीना रहो उघारे ॥ २ ॥
ऋषियों का मत नाम डुबाओ, रहो धीर उर धारे ।
कारागार चलो अपनाओ, गांधी कहत पुकारे ॥ ३ ॥
आजादी की पहन हथकड़ी, आओ लगें किनारे ।
जय स्वतंत्रते ! बोलो प्रति पल, शत्रु स्वयं थकि हारे ॥ ४ ॥

फाग नं० ११

सब मिलि चलो काँगरस जइये ॥
है खादी का कुरता टोपी, खादी की चद्दर लइये।
खादी की धोती करि धारण, खादी नगर बसइये ॥ १ ॥
देश देश के नेता आये, तिन्हें देखि हरषइये।
बोलत बोल सुधारस बरसै, सुनि नवजीवन पइये ॥ २ ॥
तीरथराज तुल्य है मेला, लै रज शीश चढ़इये।
बार बार अस मिलै न मौका, मिलि मिलि मेल बढ़इये ॥ ३ ॥
शुभ स्वराज्य की चरचा सुनिये, अपनी राय जतइये।
जो कुछ कहैं हमारे नेता, तापर ध्यान लगइये ॥ ४ ॥
दीन हीन है भारत जननी, ताके दुःख नसइये।
हिलि मिलि विद्या बुद्धि बढ़इये, कला कुशलता पइये ॥ ५ ॥
बिन तरवारि रारि हठ करिये, हँसि हँसि शीश कटइये।
अमर नाम ह्वै जइहै प्यारो! जीवन सफल बनइये ॥ ६ ॥

अररररररर कबीर—

बिछा खेल शतरंज का, पड़ै अटपटी चाल।
गांधी बाबा मात करैंगे, होगा हिन्द निहाल—
भला फिर कैसे नहीं स्वराज्य मिली ॥
बड़ी अनोखी नौकरशाही, मारेसि ऐक्ट तलवार।
भारतबासी पटा खेलिगे, कुन्द गई है धार—
भला तब नौकरशाही घबड़ाई ॥

फाग नं० १२

मन बसै हमारो खद्दर में ॥

जब ऋतु आई भई जुनाई, बये बिनौले खेतन में।
हुई सिंचाई और निराई, छवि छाई थोड़े दिन में।
होत खुशाली लखि हरियाली, छटा निराली फूलन में।
भई बिनाई और चुनाई, तब कपास आई घर में—
मन बसै हमारो खद्दर में ॥

लै चरखा फिर करी ओटाई, रुई बनाई दो दिन में।
जाय बुलायो बेहना आया, सब धुनक डाली छिन में।
भई धुनाई और तुनाई, अटक रह्यो मन पोनिन में।
रोंवा रोंवा फूल उठा है, नहीं रही फुटकी जिनमें—
मन बसै हमारो खद्दर में ॥

फिर लै चरखा गइये करखा, भूलि न जइये भरभर में।
घिन्नी न छूटै तार न टूटै, हिलै न खूँटा हरबर में।
होय सजीली माल न ढीली, तकुवा नाचै चक्कर में।
सूत एक रस ऐसा निकलै, डटै मोल की टक्कर में—
मन बसै हमारो खद्दर में ॥

देशी ताना देशी बाना, यही लगइये वस्तर में।
शुद्ध स्वदेशी दाम न बेशी, कटैं बहुत दिन चद्दर में।
है घर जानी मनकी मानी, पड़ैं विदेशी चक्कर में।
जुग जुग जियें हमारे गांधी, बजै बधाई घर घर में—
मन बसै हमारो खद्दर में ॥

फाग नं० १३

सदा अनंद रहै यह नगरी, मोहन खेलैं होली हो !
इधर प्रजा है भोली भाली, उत डायर की टोली हो !
इधर आत्मबल का आराधन, उधर जेल है खोली हो !
सहन शक्ति की ढाल इधर है, उधर दमन अरु गोली हो !
करो वही जो तुमको भावै, यही हमारी बोली हो !
सत्याग्रह पर अड़े हुये हैं, कहते छाती खोली हो !
चाहै हमको जेल भेज दो, चहै मार दो गोली हो !
जब तक नहीं स्वराज्य मिलेगा, यही हमारी होली हो !

फाग नं० १४

संतो ! उतरि चलो वहि पारा ॥
है प्रतिकूल दमन की आँधी, बड़ा विकट है धारा ।
जहाँ तहाँ उठि रहीं हिलोरैं, है नज़दीक किनारा ॥ १ ॥
कलकत्ता में भई काँगरस, तामहँ भयो विचारा ।
हुक्कामन से तल्ला तोड़ो, करो देश उद्धारा ॥ २ ॥
सरकारी न्यायालय छोड़ो, औ कालिज को द्वारा ।
कौंसिल और खिताब छोड़ दो, जो चाहो निस्तारा ॥ ३ ॥
धर्म अहिंसा कभी न भूलो, है यह अस्त्र तुम्हारा ।
सत्याग्रह की धूम मचादो, मिले मुक्ति को द्वारा ॥ ४ ॥
है दृढ़ असहयोग की नौका, करो न सोच विचारा ।
गांधी बाबा कर्ण धार हैं, मिलि है जल्द किनारा ॥ ५ ॥

फाग नं० १५

राजन्! मानों वचन हमारो ॥

दुःशासन से भई खरावी, भारत ने प्रण धारो।
अवशि अंत अब होइहै वाको, तुमहूँ करो विचारो ॥ १ ॥
नाहक ठानो रारि प्रजा से, नहिं यह काम तुम्हारो।
जल बसि करिहौ वैर मगर से, होइहै कहाँ गुजारो ॥ २ ॥
दमन नीति से भला न होइहै, जनि यह अस्त्र सम्हारो।
है सुधार को व्यर्थ खिलौना, ताहि राखिये न्यारो ॥३॥
अली बंधु को छोड़ दीजिये, है उन काह बिगारो।
तीस कोटि जाके गुण गावैं, सो कस सत्रु तिहारो ॥४॥
कैद कियो पंजाब केसरी, यह विनाश को द्वारो।
जाहि सराहैं लोग विदेशी, दोषी सो न तुम्हारो ॥५॥
देशबन्धु है दास देश को, ताकी ओर निहारो।
संभव नहीं अनीति करै वह, नीति को जाननहारो ॥६॥
सहित पिता के आज जवाहिर, बंदी बन्यो तुम्हारो।
बात बात में जिरह करैया, है कस मौन बिचारो ॥७॥
पकड़त पकड़त तुम थकि जइहौ, है जग वैरी सारो।
सारे जग की चूक नहीं है, पर है दोष तुम्हारो ॥८॥
तीस कोटि हैं ऐसे बागी, कब होइहै निस्तारो।
ताते राजन्! यही ठीक है, करि लीजै निपटारो ॥९॥
न्याय खिलाफत को करि दीजै, डायर को शिर न्यारो।
जन्म सिद्ध अधिकार हमें दो, फैले सुयश तुम्हारो ॥१०॥

फाग नं० १६

दई मारे ! भारत होरी है !

तू अति रंक विलायत रानी, तू कारो वह गोरी है।
तू है दुखी दलिद्र को दादा, वह धन धनद की छोरी है।
तू बूढ़ो बलहीन भिखारी, वह सबला पीन पछोरी है।
तू आलस ऊजड़ को उल्लू, वह साहस चंद्र चकोरी है।
तू परिताप तेल को पंपा, वह सुखरस भरी कमोरी है।
तू अपनो घर बार लुटावै, वह औरन की घर फोरी है!
तू केवल वाही को चेरा, उन जग में धारी डोरी है।
अपनो रुधिर आप तू पीवै, उन सब की लाल निचोरी है।
तू नाचै वह तोहि नचावै, तू कठपुतरा वह डोरी है!
मैली पाग पिछौरी तेरी, वह गोन भली रंग बोरी है।
तेरो मान मथै कलकत्ता, वह लंडन की झकझोरी है।
तू साहब शंकर को मानै, वह गिरजा मिस भोरी है।

JD- 3-1971

PK
2057
M57
1922

Miśra, Śivaśankara
Gazaba kī holī

PLEASE DO NOT REMOVE
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY